इकाई 1. विशाखदत्त के मुद्राराक्षस का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक परिचय

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

इससे पूर्व के खण्ड़ में आपने भारवि आदि प्रमुख कवियों का परिचय प्राप्त किया। यह तृतीय खण्ड की प्रथम इकाई है। इसमें आप विशाखदत्त द्वारा रचित मुद्राराक्षस का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक परिचय प्राप्त करेंगे।

संस्कृत नाटकों की परम्परा में महाकवि कालिदास का अभिज्ञानशाकुन्तलम तथा पाश्चात्य नाटकों में शेक्सपीयर के नाटक अत्यधिक लोकप्रिय है किन्तु संस्कृत नाट्य-जगत में एक मात्र उपलब्ध राजनीतिक नाटक 'मुद्राराक्षस' के लेखक के रूप में विशाखादत्त की कीर्ति अमर है। नाटकों में मुद्राराक्षस का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। यह सात अंकों में विभक्त है। इसका नायक धीरोदात्त ब्राह्मण चाणक्य है तथा प्रतिनायक अमात्य राक्षस है चन्द्रगुप्त उपनायक तथा मलयकेतु प्रतिनायक है। अपनी कूटनीतियों के जाल में चाणक्य राक्षस को फसांकर उसे चन्द्रगुप्त का मंत्री बनने के लिए विवश कर देता है।

इस प्रकार से अद्वैत ऐतिहासिक नाटक अपने पूर्ण नाट्य लक्षणों के साथ अद्वितीय रूप में प्रस्तुत हो ऐसा प्रयास विशाखादत्त ने सफलता पूर्वक किया है। आप प्रस्तुत इकाई के माध्यम से यह बता सकेंगे।

1.2 उद्देश्य-

इस इकाई का अध्ययन करके आप –

- मुद्राराक्षस के बारे में सरलता से जान सकेगें।
- मुद्राराक्षस के ऐतिहासिक तथा साहित्यिक ज्ञान का परिचय दे सकेगें।
- विशाखदत्त का जीवन परिचय बता सकेंगे।

1.3 विशाखदत्त का जीवन परिचय एवं कृतित्व

विशाखदत्त राजनीति-विषयक नाटकों की रचना में प्रवीण प्रतीत होते है। इनकी विश्रुत रचना तो 'मुद्राराक्षस' ही है, जो चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन से सम्बद्ध है और जो अमात्य चाणक्य की बुद्धिमत्ता तथा कुटनीतिमत्ता का एक विमल निदर्शन है।

1.3.1 विशाखदत्त का समय निर्धारण

विशाखदत्त के कालनिर्णय में बहिःसाक्ष्य बहुत कम सहायक हैं। इनके आधार पर यही कहा जा सकता है कि सर्वप्रथम मुद्राराक्षस की चर्चा धनिक कृत दशरूपावलोक (1/68) में है-तत्र बृहत्कथामूलं मुद्राराक्षसम्। धनिक का समय 1000ई०है। एक अन्य स्थल (2/55) पर भी इस ग्रन्थ में धनिक ने इस नाटक में प्रयुक्त मन्त्रशक्ति और अर्थशक्ति के उदाहरण दिये हैं। भोज ने सरस्वतीकण्ठाभरण (5/65) में मुद्रारक्षस का नाम लिये बिना इसके दो पद्य (1/22 तथा 3/21)

उद्धृत किये हैं। यह 11 वीं शताब्दी ई॰ का ग्रन्थ है। इनकी अपेक्षा इसीलिए अन्तः साक्ष्य अधिक चर्चित और व्यवस्थित है।

अन्त:साक्ष्य की दृष्टि से चार महत्त्वपूर्ण विचारणीय विषय हैं-(1) भरतवाक्य में 'चन्द्रगुप्त' आदि पाठ, (2) भरतवाक्य में म्लेच्छों के आक्रमणकी चर्चा, (3) प्रस्तावना में चर्चित चन्द्रग्रहण तथा (4) जैन-बौद्ध धर्मों के प्रति विचार। इनका क्रमश: विवेचन किया जाता है।

भरतवाक्य में चन्द्रगुप्तादि पाठ-मुद्राराक्षस के भरत-वाक्य (7/18) में उत्तरार्ध इस प्रकार है-

म्लेच्छैरुद्वीज्यमाना भुजयुगमधुना संश्रिता राजमूर्तेः

स श्रीमद्वन्धुभृत्यश्चिरमवतु महीं प्रार्थिवश्चन्दगुप्तः। इसमें राजा चन्द्रगुप्त के द्वारा पृथ्वी की चिर-रक्षा का आशीर्वाद है। भरतवाक्य कथानक का अंक नहीं होता, अपितु उसमें नाट्यकार अपने समकालिक किसी राजा के प्रशंसा करता है। यद्यपि इस प्रसंग में 'पार्थिवोऽवन्तिवमां' 'पार्थिवो दन्तिवर्मा' 'पार्थिवो रन्तिवर्मा' इत्यादि अनेक पाठ मिलते हैं, तथापि बहुसंख्यक विद्वानों ने 'चन्द्रगुप्त' वाले पाठ को मूल एवं अन्य पाठों को परिवर्तित (ऊह-रूप) कहा है। यह चन्द्रगुप्त प्रसिद्ध गुप्तवंशीय नरेश चन्द्रगुप्त द्वितीय था जिसका शासन-काल 375ई॰ से 413 ई॰ तक माना जाता है। विशाखदत्त का अन्य नाटक 'देवीचन्द्रगुप्त' भी इसी राजा के सिंहासनारोहण से सम्बद्ध है। गुप्तवंशीय राजा विष्णु के उपासक थे। उक्त भरतवाक्य में भी विष्णु की वराहमूर्ति की चर्चा है। गुप्तकाल के ही उद्यगिरि-अभिलेख वाली गुफा में चित्रित वराह की मूर्ति मिली है जिसमें असुरों से पृथ्वी की रक्षा वराह कर रहे हैं, भरतवाक्य का सीधा सम्बन्ध इस गुहाचित्र से है। मुद्राराक्षस की विषय-वस्तु और अभिनेयता ने इसका अभिनय बार-बार कराया था; संकट के बाद राज्य पाने वाले राजाओं ने इसके मंचन को शुभ मानकर इसका अभिनय कराया और उनके प्रशंसकों ने राजा का नाम भरत-वाक्य में बदलना आरम्भ कर दिया। इसीलिए अवन्तिवर्मा आदि अनपेक्षित नामों वाले पाठ उत्पन्न हुए। तेलंग, ध्रुव तथा पं॰ बलदेव उपाध्याय ने अवन्तिवर्मा (मौखरिवंश के राजा, षष्ठ शताब्दी ई॰ का उत्तरार्ध) वाले पाठ को प्रामाणिक मानकर विशाखदत्त का समय 550-600ई॰ माना है। किन्तु वस्तुस्थिति इसके प्रतिकूल है। लेखक ने चुन्द्रगुप्त मौर्य और चन्द्रगुप्त द्वितीय की राज्य-प्राप्ति में साम्य देखकर इस नाटक की रचना की प्रेरणा पायी थी; उसका प्रबल समर्थन उन्होंने 'देवीचन्द्रगुप्त' लिखकर किया।

भारतवर्षके जिस रूप की प्रशंसा मुद्राराक्षस (3/19 आ शैलेन्द्रात्.........आतीरात् दक्षिणस्यार्णवस्था) में की है, वह अवन्तिवर्मा के राज्य में सम्भव नहीं था; अपितु चन्द्रगुप्त द्वितीय का ही राज्य था। गुप्तकाल में ही पाटलिपुत्र में समारोह-पूर्वक कौमुदी-महोत्सव मनाया जाता था जिसकी मुद्राराक्षस में (3/19 के बाद), भले ही कृतककलह के निमित्त उसके निषेध के लिए, चर्चा है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन-काल में, फाहियान के अनुसार, बौद्ध धर्म की स्थिति अच्छी थी। मुद्राराक्षस में वर्णित व्यवस्था से उसकी संगति बैठ जाती है। इस प्रकार विशाखदत्त को 400-450 ई॰ में मानने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती।

म्लेच्छों का आक्रमण- उपर्युक्त भरत वाक्य में म्लेच्छों के आक्रमण का उल्लेख है जिसका प्रतीकार विशाखदत्त के समकालिक (अधुना) राजा चन्दगुप्त या अवन्तिवर्मा ने किया था।

प्राचीन भारत में सामान्यतः विदेशियों को 'म्लेछ' कहा जाता था; वे वर्णाश्रम-धर्म को नहीं मानते थे। ईस्वी सन की प्रारम्भिक शताब्दियों में क्रमश: शकों तथा हूणों को म्लेच्छ कहते थे; यह बात अवश्य थी कि म्लेच्छों ने यहाँ शासन करना आरम्भ कर दिया था। 'अवन्तिवर्मा' पाठ मानने वाले कहते हैं कि इस राजा ने प्रभाकरवधर्न (हर्ष के पिता) के सहयोग से 582 ई॰ में हूणों को पराजित किया था। किन्तु चन्द्रगुप्त द्वितीय के द्वारा अपने सिंहासनारोहण के समय ही शकों को पराजित करने का तथ्य इसकी अधिक प्रबल है; शकराज को मारकर चन्द्रगुप्त (द्वितीय) ने ध्रुवदेवी से परिणय किया ताकि म्लेच्छों से आक्रान्त पृथ्वी पर पुनः सनातन व्यवस्था स्थापित की। इसकी संगति अधिक ग्राह्य है।

चन्द्रग्रहण का उल्लेख

मुद्राराक्षस की प्रस्तावना में ऐसे चन्द्रग्रहण का उल्लेख है जो बुध-योग के कारण टल जाता है। यद्यपि इसमें श्लेष द्वारा ज्योतिषशास्त्रीय एवं प्रकृत विषय-दोनों का निरूपण है,' किन्तु इसमें निर्दिष्ट तथाकथित चन्द्रग्रहण की व्यवस्था को लेकर भी विद्वानों ने विशाखदत्त का काल निरूपित किया हैं विशाखदत्त ज्योतिष के विद्वान् थे। इस शास्त्र में बुध योग से चन्द्रग्रहण का निवारण-सिद्धान्त वराहमिहिर (500ई॰ के लगभग) के पूर्व में ही प्रचलित था। वराहमिहिर ने अपनी 'बृहत्संहिता' में कहा है कि बुधयोग से चन्द्रगहण का निषेध नहीं होता। यह स्थिति विशाखदत्त को 500ई॰ पूर्व सिद्ध करती है जो चन्द्रगुप्त (द्वितीय) के राज्यकाल में या उससे कुछ ही बाद विशाखदत्त का काल मानने का समर्थन करती है।

जैन-बौद्ध धर्मों के प्रति धारणा

मुद्राराक्षस के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि विशाखदत्त के समय में जैन और बौद्ध धर्म समाज में आदरणीय थे। इस नाटक के सप्तम अंक में राक्षस कहता है कि बोधिसत्त्वों का तग तो प्रसिद्ध है किन्तु चन्दनदास ने अपने कर्म से (मित्र के लिए प्राणत्याग करते हुए) उनके चरित्र को भी न्यून बना दिया (7/5)। इसी प्रकार क्षपणक जीवसिद्धि का ब्राह्मणों के साथ रहना भी जैनधर्म के प्रति आदरभाव का सूचक है। ये दो धर्म सप्तम शताब्दी से हासोन्मुख हुए। अतः विशाखदत्त को 600ई॰ से पूर्व रखना उपयुक्त है। इस दृष्टि से वे मौखरि अवन्तिवर्मा के अथवा चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल में भी रखे जा सकते हैं किन्तु अन्य स्थितियाँ (जैसे सम्पूर्ण भारत का एकछत्र राज्य मानना, विष्णु से अपने आश्रयदाता की भरतवाक्य में तुलना, देवीचन्द्रगुप्त की रचना इत्यादि) विशाखदत्त को चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल में सिद्ध करती हैं। प्रो॰ हिलब्राँ ,स्पेयर, टॉनी, रणजित पण्डित, सी॰ आर॰ देवधर आदि इसी के समर्थक हैं। इस मत के प्रवर्तक प्रसिद्ध इतिहासविद् डॉ॰ काशीप्रसाद जायसवाल थे।

1.3.2 विशाखदत्त का जीवन परिचय

नाटक की प्रस्तावना में सूत्रधार के द्वारा विशाखदत्त का कुछ परिचय दिया गया है। विशाखदत्त के पितामह वटेश्वरदत्त थे। इनके पिता का नाम महाराज पृथु अथवा भास्कर दत्त था। कहीं-कहीं इनका नाम विशाखदेव भी मिलता है। इनके पिता तथा पितामह के नामों को देखने से प्रतीत

होता है कि सम्बन्ध किसी राजवंश से था, क्योंकि प्राचीन काल में किसी एकच्छत्र सम्राट् के अधीनस्थ राजाओं को 'सामन्त' कहा जाता था। ऐसा प्रतीत होता है कि कवि विशाखदत्त किसी चक्रवर्ती सम्राट् के आश्रित थे। इन्होंने उसी राजा के गुणों का वर्णन नाटक में प्रकारान्त से किया है। मुद्राराक्षस में विशाखदत्त के जीवन के विषय अन्तः साक्ष्य नहीं है। फिर भी इस नाटक में गौड़देश की प्रथाओं, रीति-रिवाजों तथा सूक्ष्मतिसूक्ष्म बातों का वर्णन होने से ऐसा प्रतीत होता है कि ये गौड़देश के वासी थे। उनके प्रदेश में धान की खेती अधिक मात्रा में होती थी। इसी कारण धान की सघनता से वे पूर्णतः परिचित थे। मलयकेतु की सेना में रहने वाले खर्शों के प्रति विशाखदत्त का विशेष लगाव दिखाई पड़ता है। इससे लगता है कि विशाखदत्त देश के वासी थे। मुद्राराक्षस के अन्तिम श्लोक 'भरतवाक्य' से भी विद्वानों ने विशाखदत्त आश्रयदाता राजा का अनुमान किया है। यह श्लोक इस प्रकार है-

वाराहीमात्योनेस्तनुमतनुबलामास्थितस्यानुरूपां
यस्य प्राग्दन्तकोटिं प्रलयपरिगता शिश्रिये भूतधात्री
म्लेच्छैरूद् वेज्यमाना भुजयुगमधुना संश्रिता राजमूर्तेः
सश्रीमद्बन्धुभृत्यश्चिचरमवतु महीं पार्थिवश्चन्दगुप्तः।।-(7/19)मुद्रा0

इस श्लोक के अन्त में चार पाठभेद हैं-

1. पार्थिवो रन्तिवर्मा
2. पार्थिवोऽवन्तिवर्मा
3. पार्थिवो दन्तिवर्मा
4. पार्थिवश्चन्द्रगुप्तः

इस चारों पाठभेदों में से प्रामाणिक पाठ का निर्णय होने पर विशाखदत्त के काल का भी निर्णय हो सकता है। प्रथम पाठ में कथित राजा रन्विर्मा के नाम का उल्लेख किसी भी इतिहासकार ने नहीं किया है। अतः रन्तिवर्मा के साथ कवि विशाखदत्त का सम्बन्ध किसी भी तरह स्थापित नहीं किया जा सकता है। दूसरा पाठ 'अवन्ति वर्मा' है। इतिहास के अनुसार अवन्तिर्मा नाम के दो राजा हुए हैं। पहले काश्मीर के राजा तथा दूसरे कन्नौज के मौखरिवंश के थे। काश्मीर के राजा अवन्ति वर्मा नवीं शताब्दी के मध्य (855-863ई०) में हुए थे। कवि विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस में काश्मीर नरेश के लिये म्लेच्छ जैसे घृणित नाम का प्रयोग किया है। इसलिये विशाखदत्त के आश्रयदाता काश्मीर नरेश नहीं हो सकते। दूसरी बात यह है कि याकोबी ने नाटक की प्रस्तावना में उल्लिखित चन्द्रग्रहण को 2 दिसम्बर 860ई० का माना है। अतः विशाखदत्त निश्चित ही इस चन्द्रग्रहण से पूर्व के होने चाहिये। अतः विशाखदत्त काश्मीर नरेश अवन्तिवर्मा के काल के प्रतीत नहीं होते हैं।

दूसरे अवन्ति वर्मा भी भारत कन्नौज के मौखरि वंश के थे। इनका समय छठीं शताब्दी उत्तरार्ध में था। किन्तु यह राजा कभी भी भारत का एकछत्र सम्राट नहीं था, जैसा कि वर्णन विशाखदत्त ने भरतवाक्य में किया है। दूसरी बात यह है कि इस अवन्तिवर्मा ने कभी भी म्लेच्छों को परास्त नहीं किया था। कुछ लोग कहते हैं कि अवन्तिवर्मा ने थानेश्वर के राजा प्रभाकरवर्धन की

सहायता से सन् 582ई० में हूणों को परास्त किया था तथा तथा भरतवाक्य में कथित म्लेच्छ पद हूणों के लिये ही आया है। किन्तु म्लेच्छ कहने से हूणों का ही अर्थ लिया जाए, इसमें कोई प्रमाण नहीं है। क्योंकि विशाखदत्त ने तो नाटक में कुतूलाधिपति चित्रवर्मा, मलय के राजा सिंहनाद, कश्मीर नरेश पुष्कराक्ष, सिन्धु के शासक सिन्धुशेण तथा फारस के अधिपति मेघ को भी म्लेच्छ कहा है। पर्वतश्वर तथा मलयकेतु को भी विशाखदत्त म्लेच्छ कहते हैं। फिर भरतवाक्य में उल्लिखित 'म्लेच्छ' पद से हूणों को मानकर कन्नौज के राजा अवन्तिवर्मा का पाठ भी उचित नहीं लगता। तृतीय पाठान्तर में राजा दन्तिवर्मा को स्वीकार किया गया है। दन्तिवर्मा पल्लवनरेश थे। इनका समय अष्टम शतक उत्तरार्ध है। किन्तु इन राजा दन्तिवर्मा ने म्लेच्छों को परास्त किया था-इसका कोई भी प्रमाण उपलब्ध नहीं है। साथ ही प्रो० ध्रुव ने कहा है कि पल्लव राजा कट्टर शैव थे, जबकि विशाखदत्त ने इन्हें विष्णु का अवतार माना है। अतः 'दन्तिवर्मा' का यह पाठभेद ठीक नहीं है।

अन्ततः 'चन्द्रगुप्त' यह पाठ ही परिशेषात् उचित मालूम पड़ता है। इतिहास में तीन चन्द्रगुप्तों का वर्णन मिलता है। प्रथम चन्द्रगुप्त मौर्य, दूसरे गुप्तवंशीय चन्द्रगुप्त प्रथम तथा तीसरे चन्द्रगुप्त मौर्य ही मुद्राराक्षस के नायक हैं। विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस के राक्षस के मुख से चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त के लिए कटुशब्दों का प्रयोग किया है इसलिये चन्द्रगुप्त मौर्य विशाखदत्त के आश्रयदाता नहीं हो सकते। दूसरे गुप्तवंशीय चन्द्रगुप्त प्रथम ने म्लेच्छों को परास्त किया था-इस बात का कोई ऐतिहासिक आधार नहीं हैं अन्ततः विशाखदत्त चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के आश्रय में थे-इसी बात को स्वीकार किया जा सकता है। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों को परास्त किया था। विशाखदत्त ने शकों को म्लेच्छ कहा है। भरतवाक्य में चन्द्रगुप्त को विष्णु का अवतार कहा गया है। यह बात चन्द्रगुप्त द्वितीय पर पूर्ण लागू होती है। उन्हें भी विष्णु भक्त तथा विष्णुका अवतार माना जाता है।

इस प्रकार इस विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि विशाखदत्त चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रामदित्य के काल में (400ई०) हुए थे। भरतवाक्य में प्रयुक्त 'अधुना' शब्द से विक्रमादित्य तथा विशाखदत्त की समानकालीनता सिद्ध होती है। मुद्राराक्षस के टीकाकार ढुण्ढिराज पण्डित जैसे कुछ लोगों का कहना है भरतवाक्य में उक्त राजा चन्द्रगुप्त मौर्य ही हैं क्योंकि प्रसरत: वहाँ चन्द्रगुप्त मौर्य का ही नाम उचित लगता है। चन्द्रगुप्त मौर्य ने भी सेल्यूकस को परास्त किया था तथा सेल्यूकस को यूनानी होने से म्लेच्छ कहा जा सकता है। किन्तु ऐसा मानने पर भी विशाखदत्त को चन्द्रगुप्त मौर्य का आश्रित नहीं माना जा सकता है, क्योंकि नाटक में चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य के लिये कटुवचनों का प्रयोग है। ऐसी दशा में तो विशाखदत्त का काल ही निर्धारित नहीं हो सकता है। इस प्रकार कुल मिलाकर विशाखदत्त को चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य (400ई०) के ही काल का मानना न्यायसंगत है।

1.3.3 विशाखदत्त का कृतित्व

मुद्राराक्षस के अतिरिक्त विशाखदत्त के अन्य दो ग्रन्थ हैं-देवीचन्द्रगुप्तम् तथा अभिसारित

वञ्चितकम्। 'देवीचन्द्रगुप्तम' में चन्द्रगुप्त द्वितीय के पराक्रम का भव्य वर्णन है।
'अभिसारितवञ्चितकम्' में वत्सराज उदयन के चरित्र का वर्णन है।

मुद्राराक्षस का नामकरण

मुद्राराक्षस में राक्षस की मुद्रा (अंगुठी) की विशेष भूमिका है। इसी मुद्रा के द्वारा चाणक्य ने राक्षस को वश में किया। मुद्राराक्षस का ही यही अर्थ है-मुद्रया गृहीतः राक्षसः यस्मिन् तत् मुद्राराक्षसं नाटकम्। चाणक्य ने शकटदास से एक गुप्त पत्र लिखवाकर उस पर राक्षस की अंगूठी से चिन्ह लगाया तथा उसी पात्र के आधार पर मलयकेतु को राक्षस से अलग कर दिया। संस्कृत नाटकों में मुद्राराक्षस का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। यह सात अंकों में विभक्त है। इसका नायक धीरोद्धत ब्राह्मण चाणक्य है तथा प्रतिनायक अमात्य राक्षस है। चन्द्रगुप्त उपनायक तथा मलयकेतु उपप्रतिनायक है। इसमें वीररस प्रधान रस है। सम्पूर्ण नाटक में चाणक्य की कूटनीतियों का विलास है। अपनी कूटनीतियों के जाल में चाणक्य राक्षस को फंसाकर उसे चन्द्रगुप्त का मन्त्री बनने के लिये विवश कर देता है।

मुद्राराक्षस की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1.सामान्यतया संस्कृत नाटक प्रेमकथा पर आश्रित रहते हैं। कालिदास के तीनों नाटकों का आधार प्रेमकथा ही है, किन्तु मुद्राराक्षस में प्रेमकथा का सर्वथा अभाव है। इसलिये मुद्राराक्षस में नायिका ही नहीं है। यहाँ तक कि इस नाटक में स्त्रीपात्र भी केवल तीन हैं- मलयकेतु की प्रतिहारी शोणोत्तरा, विजया तथा चन्दनदास की पत्नी। किन्तु ये स्त्रीपात्र भी श्रृंगार का उद्दीपन नहीं करते हैं। इस नाटक में श्रृंगार भावना का पूर्णतः अभाव है। चाणक्य की कूटनीति के दांव-पेचों से सारा नाटक व्याप्त है।

2.नायिका के साथ-साथ इस नाटक में विदूषक का भी अभाव है। राजीनीति के दांव-पेचों में उलझे हुए दर्शकों को विदूषक का अभाव जरा भी नहीं खलता है।

3.मुद्राराक्षस की तीसरी प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें बिना युद्ध के ही चाणक्य ने राक्षस को वश में कर लिया है- विनैव युद्धादार्येण जितं दुर्जयं परबलमिति। नाटक में एक भी अस्त्र-शस्त्र नहीं चला, न ही कोई मारा गया या घायल हुआ फिर भी केवल कूटनीति के आधार पर ही राक्षस की पराजय हो जाती है।

4. मुद्राराक्षस एक नवीन प्रकार की रचना है। यह नाटक के नियमों के पूर्णतः अनुरूप नहीं है, क्योंकि इसकी रचना कोई नाटय शास्त्रीय नियमों को मानकर चलने के लिये नहीं हुई, बल्कि जनमनोरंजन के लिए हुई है। यद्यपि विशाखदत्त नाटयशास्त्र के नियमों के पूर्णतः ज्ञाता थे, तथापि उन्होंने नवीन प्रयोग कर अपनी वैयक्तिक प्रतिभा दिखाने का सफल प्रयास किया है। मुद्राराक्षस में नाटकों में प्राचीन परम्परा के अनुसार कोई प्रख्यातवंशीय राजा नायक नहीं बना है, अपितु एक साधारण ब्राह्मण नायक बना है। इसका इतिवृत्त भी किसी प्रेमकथा पर आधारित न होकर ऐतिहासिक है। इस प्रकार विशाखदत्त ने अपनी इस रचना में नवीन प्रयोग किया है।

5. मुद्राराक्षस में सभी प्रमुख पात्रों का चरित्र अत्यन्त सुन्दर ढंग से चित्रित किया गया है। राक्षस-

चाणक्य तथा मलयकेतु-चन्द्रगुप्त का प्रतिद्वन्द्व प्रमुख रूप से वर्णित है। चन्द्रगुप्त चाणक्य का अंधभक्त है, जबकि मलयकेतु पग-पग पर राक्षस पर संदेह करता है। राक्षस तथा चाणक्य के परस्पर संघर्ष पर ही उन दोनों का चारित्रिक विकास निर्भर है।

6.मुद्राराक्षस की अत्यन्त महत्वपूर्ण विशेषता है-उसके इतिवृत्त की योजना। विशाखदत्त ने सम्पूर्ण नाटक में कथा के तीनों-बानों का जाल बड़ी कुशलता से बुना है। कथा के प्रारम्भ में सभी घटनाएँ अलग-थलग बढ़ती हुई दिखाई देती हैं तथा अन्त मे उन सभी घटनाओं का एक स्थान पर सामंजस्य होता है। सम्पूर्ण नाटक में कोई भी ऐसा पात्र नहीं है जो कि निरर्थक हो। चाणक्य के द्वारा नाटक के प्रारम्भ में प्रयुक्त सभी व्यक्ति अन्ततः राक्षस को वश में करने में सफल भूमिका निभाते हैं। कथावृत्त की ऐसी चातुर्यपूर्ण योजना विशाखदत्त की अनुपम विशेषता है।

विशाखदत्त की शैली

मुद्राराक्षस में विशाखदत्त का अभिनव रचना कौशल दिखलाई पड़ता है। मुद्राराक्षस की शैली प्रसादगुणयुक्त तथा प्रांजल है। इसकी भाषा मधुर तथा सरल है।

आस्वादितद्विरदशोणितशोणशोभाम्
सन्ध्यारुणामिव कलां शशला छनस्य।
जृम्भाविदारितमुखस्य मुखात् स्फुरन्तीं
को हर्त्तुमिच्छति हरेः परिभूय द्रंष्ट्राद्रम्।। -1/8

मुद्राराक्षस में शब्दविन्यास या तो असमस्त है या अल्पसमस्त। इसमें श्लोंकों की भी प्रचुर योजना है। इसका गद्यभाग भी अत्यन्त प्रभावशाली तथा संवाद बड़े रूचिकर हैं। जैसे-

''अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः।''

''कीदृशः पुनः तृणानामग्निा सह विरोधः।''

इसमें सभी पात्रों का चित्रण भी बड़ा स्वाभाविक है। इतिवृत्त की योजना में कवि नितान्त निपुण हैं।

1.3.4 मुद्राराक्षस का कथासार

प्रथम अंक में सर्वप्रथम नान्दी तथा प्रस्तावना होती है। सूत्रधार के द्वारा चन्द्रग्रहण के वर्णन के ब्याज से चाणक्य का प्रवेश किया जाता है। चाणक्य अपने शिष्य के साथ बैठकर चन्द्रगुप्त पर आक्रमण करने के लिये उद्यत राक्षस तथा मलयकेतु को वश में करने का विचार करता है। बिना राक्षस को नियंत्रित किये चन्द्रगुप्त का राज्य स्थिर नहीं हो सकता है। वह राक्षस को वश में करने के सम्बन्ध में अपनी योजनाओं की जानकारी देता है। उस समय चाणक्य के द्वारा प्रयुक्त गुप्तचर निपुणक वहाँ आकर सूचना देता है कि राक्षस के परिवारजन चन्द्रनदास नामक वैश्य के यहाँ सुरक्षित हैं। वहाँ से गुप्तचर को राक्षस की नामांकित मुद्रा मिली है, जिसे वह चाणक्य को दे देता है। चाणक्य मुद्रा प्राप्त करके प्रसन्न हो जाता है और शकटदास के द्वारा एक कपटपूर्ण लेख लिखवाकर उसे राक्षस की मुद्रा से मुद्रांकित कर देता है। शकटदास यह नहीं जान पाता कि लेख को चाणक्य ने लिखवाया है। फिर चाणक्य वह लेख सिद्धार्थक को देकर उसके कानों में गुप्त

योजना बताता है और उसे कहता है कि वह शकटदास, जिसे चाणक्य ने मृत्युदण्ड की सजा दी है, उसे मृत्युस्थान से छुड़वाकर राक्षस के यहाँ पहुँचा दे। उसके पश्चात् चाणक्य चन्दनदास को बुलवाता है तथा उसे कहता है वह राक्षस के परिवारजनों को सौंप दे। चन्दनदास किसी भी कीमत पर राक्षस के परिवारजनों को सौंपने के लिये तैयार नहीं होता। चाणक्य उसे बन्धन में डालने की आज्ञा देता है तथा अपने ही गुप्तचर जीवसिद्धि क्षपणक को देश निकाला देता है ताकि वह राक्षस के पास जा सके।''सिद्धार्थक ने शकटदास को भगा दिया'-यह समाचार जानकर चाणक्य खुश हो जाता है और राक्षस को पकड़ने के लिये निश्चित होकर निकल जाता है। **द्वितीय अंक** के प्रारम्भ में सपेरे के वेश में विराधगुप्त प्रवेश करता है। कञ्जुकी राक्षस को मलयकेतु के द्वारा दिये गये आभूषण देता है। विराधगुप्त राक्षस को कुसुमपुर के समाचार बतलाता है-''राक्षस ने पर्वतेश्वर को विषकन्या के द्वारा मारा है- यह समाचार कुसुमपुर में फैलाया गया है। चन्द्रगुप्त ने अर्धरात्रि में नन्दभवन में प्रवेश किया है। राक्षस के द्वारा किये गये चन्द्रगुप्त वध के सारे षड्यन्त्रों को चाणक्य ने नष्ट कर दिया है। चन्दनदास कैदखाने में डाल दिया गया है।'' यह सारा समाचार विराधगुप्त राक्षस को सुनाता है। उसी समय वहाँ शकटदास को लेकर सिद्धार्थकि उपस्थिति होता है। शकटदास अपनी बन्धन से मुक्ति का वृत्तान्त राक्षस को बतलाता है। राक्षस प्रसन्न होकर सिद्धार्थक को मलयकेतु के द्वारा दिये गये आभूषण दे देता है। सिद्धार्थक उन आभूषणों को चुपके से राक्षस की मुद्रा से अंकित कर रख लेता है। शकटदास तथा सिद्धार्थक के चले जाने पर विराधगुप्त पुनः राक्षस के कुसुमपुर का वृत्तान्त सुनाता है। राक्षस विराधगुप्त को चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त में विवाद करवाने के लिये कुसुमपुर भेजा देता है। उधर राक्षस चाणक्य के गुप्तचर से ही अनजाने में कुछ आभूषण खरीद लेता हैं ये वही आभूषण हैं जो पर्वतेश्वर धारण किया करते थे।

तृतीय अंक चन्द्रगुप्त कंचुकी से कौमुदी महोत्सव रोके जाने का कारण पूछता है। कंचुकी बताता है कि यह चाणक्य का आदेश है। चन्द्रगुप्त चाणक्य से मिलता है और उनके द्वारा कौमुदीमहोत्सव रोकने का कारण पूछता है। चाणक्य कहता है कि सचिवायत्तसिद्धि का राजा से कोई प्रयोजन नहीं है। तभी राक्षस का गुप्तचर वैतालिक के रूप से चन्द्रगुप्त के क्रोध के उत्तेजक श्लोक कहता है। चन्द्रगुप्त वैतालिक को सौ हजार सुवर्णमुद्रा देता है। चाणक्य चन्द्रगुप्त को मना करता है। चन्द्रगुप्त पुनः चाणक्य से कौमुदीमहोत्सव रोकने का कारण पूछता है। चाणक्य कहता है कि पहला कारण तो तुम्हारी आज्ञा का उल्लंघन करना है और दूसरा कारण यह है कि सेना को तैयार कराने का समय है, उत्सव का नहीं। चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त में कृतककलह (नकली विवाद) होता है। चन्द्रगुप्त कहता है आपकी अपेक्षा राक्षस अधिक प्रशंसनीय है। चाणक्य अपना मन्त्रीपद् त्यागने की घोषणा करता है। चन्द्रगुप्त भी कहता है मैं चाणक्य के बिना राज्य का संचालन कर लूँगा।

चतुर्थ अंक- राक्षस का गुप्तचर करभक राक्षस के पास आता है तथा उसे चन्द्रगुप्त एवं चाणक्य के कलह की बात बतलाता है। उधर भागुरायण मलयकेतु को भड़काता है कि चाणक्य के चन्द्रगुप्त से अलग हो जाने पर राक्षस स्वामिपुत्र चन्द्रगुप्त से सन्धि कर सकता है। भागुरायण के

साथ मलयकेतु मज्ज पर आता है और राक्षस के साथ मलयकेतु की बातचीत होती है। सभी लोग चन्द्रगुप्त पर आक्रमण करने का निश्चय करते हैं। मलयकेतु स्वयं को अमात्याधीन न होने से धन्य मानता है। मलयकेतु तथा भागुरायण के चले जाने पर राक्षस शत्रु पर आक्रमण करने के लिये शुभ मुहूर्त निकालने का निश्चय करता है। जीवसिद्धि क्षपणक वहाँ आता है और राक्षस को मुहूर्त बतलाता है। राक्षस उसके बताये मुहूर्त से सन्तुष्ट नहीं होता। क्षपणक क्षुब्ध होकर वहाँ से चला जाता है। राक्षस भी वहाँ से निकल जाता है।

पंचम अंक - सिद्धार्थक तथा क्षपणक की बातचीत से मालूम पड़ता है कि राक्षस के शिविर से निकलने या प्रवेश करने के लिये मुद्रित पत्र का पास में होना आवश्यक है। क्षपणक मुद्रितपत्र की प्राप्ति के लिये भागुरायण के पास जाता है। भागुरायण समझता है कि क्षपणक राक्षस का मित्र है, लेकिन क्षपणक राक्षस के प्रति घृणा प्रकट करता है। वह कहता है राक्षस ने पर्वतेश्वर को विषकन्या के द्वारा मारा है। मलयकेतु ये सारी बातें छुपकर सुन लेता है। क्षपणक के जाने पर मलयकेतु वहाँ आता है। सिद्धार्थ बिना मुद्रित पत्र के शिविर के बाहर जाने लगता है। राक्षस के सेवक उसे पकड़कर मलयकेतु तथा भागुरायण के पास ले आते हैं। सिद्धार्थ के पास से राक्षस की मुद्रा से मुद्रित पत्र (इसे चाणक्य ने शकटदास से लिखवाकर मुद्रित करवाया था) तथा अलंकारपेटिका मिलती है। पत्र में चन्द्रगुप्त से राक्षस की सन्धि की बात लिखी है। सिद्धार्थ कहता है कि यह पत्र तथा आभूषण उसे राक्षस ने चन्द्रगुप्त को देने के लिये दिया है। मलयकेतु यह सुनकर अत्यन्त क्रोधित हो जाता है और राक्षस को मारने के लिये तैयार हो जाता है। भागुरायण उसे शान्त करता है। राक्षस वही आभूषण पहनकर वहाँ आता है, जो उसने चाणक्य के गुप्तचर से खरीदे थे। वस्तुतः ये आभूषण पर्वतेश्वर के थे। मलयकेतु राक्षस को उन आभूषण में देखकर उन्हें पर्वतेश्वर का घातक समझ लेता है। वह राक्षस को शिविर से बाहर निकाल देता है और मलयकेतु चित्रवर्मा आदि राजाओं को मार डालने का आदेश देता हैं मलयकेतु चन्द्रगुप्त आक्रमण करने के लिये चला जाता है और राक्षस चन्दनदास को छुड़ाने चला जाता है।

षष्ठ अंक- प्रारम्भ में सुसिद्धार्थक तथा सिद्धार्थक का वार्तालाप होता है। उनके वार्तालाप से मालूम होता है कि मलयकेतु को चन्द्रगुप्त के सैनिकों ने पकड़ लिया है तथा राक्षस कुसुमपुर की ओर गया हैं सुसिद्धार्थक तथा सिद्धार्थक वहां से निकल जाते हैं। एक पुरुष हाथ में रस्सी लेकर पर आता है। उसकी राक्षस से भेंट होती है। राक्षस उस पुरुष से उसका परिचय पूछता है, तब वह पुरुष बताता है कि आज चन्दनदास को अमात्यराक्षस के परिवारजों को रखने के आरोप में सूली पर चढ़ाया जा रहा है। उसकी मृत्यु को सहन न करने से उसका एक घनिष्ठिमित्र जिष्णुदास अग्नि में प्रवेश करने वाला है और वह जिष्णुदास मेरा परम मित्र है। मैं उसका प्राणविरह सहन नहीं कर पाऊँगा। तो जब तक जिष्णुदास अग्नि में प्रवेश नहीं करता, उसके पहले ही मैं रस्सी से लटककर आत्महत्या करने के लिये यहाँ आया हूँ। यह सुनकर राक्षस उसे बताता है कि मैं ही राक्षस हूँ। राक्षस उस पुरुष को जिशणुदास को मरने से रोकने के लिये भेजता है और स्वयं चन्दनदास की रक्षा के लिये निकल जाता है।

सप्तम् अंक-दो चाण्डाल (जल्लाद) चन्दनदास को वध्यस्थान की ओर ले जाते है। चन्दनदास की पत्नी तथा पुत्र विलाप करते हैं। उन दोनों को सान्त्वना देता है। तभी राक्षस वहाँ उपस्थित होकर आत्मसपर्मण कर देता है। चाणक्य भी पर्दे के पीछे से वहाँ उपस्थित होता है और राक्षस का अभिवादन करता है। चाणक्य राक्षस से कहता है कि आपको चन्द्रगुप्त का मन्त्री बनाने के लिये यह सारा मेरी नीति का प्रयोग है। चन्द्रगुप्त मंच पर आकर राक्षस का अभिवादन करता है। राक्षस भी अन्ततः मित्ररक्षा के लिये चन्द्रगुप्त का मन्त्रित्व स्वीकार करता है। राक्षस की प्रार्थना पर मलयकेतु को उसके पिता का राज्य दे दिया जाता है। चन्दनदास मुख्यश्रेष्ठ बना दिया जाता है। चाणक्य अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण हो जाने से शिखा बांध लेता है। अन्त में राक्षस के द्वारा भरतवाक्य कहने पर नाटक की समाप्ति हो जाती है।

1.4.5 प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण

चाणक्य- मुद्राराक्षस के नायक चाणक्य हैं। यह श्रोत्रिय ब्राह्मण हैं तथा अत्यन्त ही सादा जीवन व्यतीत करते हैं। वह पुरानी झोपड़ी में रहते हैं। ये चन्द्रगुप्त मौर्य के मन्त्री हैं तथा अपनी कुशलता राजनीतिज्ञता के बल पर इन्होंने राक्षस को वश में किया है। सम्पूर्ण नाटक का सूक्ष्मावलोकन करने पर चाणक्य की निम्नलिखित चारित्रिक विशेषताएँ प्रकट होती हैं-

1. दृढ़प्रतिज्ञ-चाणक्य अत्यन्त दृढ़निश्चयी हैं। ये एक बार जो मन में ठान लेते हैं वह कार्य करके ही दम लेते हैं। नन्द साम्राज्य को नष्ट करके मौर्य साम्राज्य को स्थापित करने के लिये वे यह प्रतिज्ञा करते हैं कि ‘‘मैं अपनी शिखा तभी बाधूँगा, जब मौर्य साम्राज्य स्थापित हो जाएगा।’’अपनी यह प्रतिज्ञा अन्ततः पूर्ण करते हैं। अमात्य राक्षस जैसा व्यक्ति भी चाणक्य के सामने हताश हो जाता है। राक्षस को चन्द्रगुप्त का मंत्री बनाकर ही चाणक्य दम लेते हैं।

2. महान तेजस्वी तथा प्रचण्ड क्रोधी- चाणक्य बड़े ही तेजस्वी और महान् पुरुष थे। नन्द जैसे व्यक्ति जो कि ऐश्वर्य में कुबेर के समान थे तथा शक्ति में इन्द्र के समान थे, वह भी चाणक्य के तेज के सामने नहीं टिक पाये। वह प्रचण्ड क्रोधी थे। उनका या चन्द्रगुप्त का अनिष्ट करना अत्यन्त क्रुद्ध सिंह के मुख से जबरदस्ती तोड़कर दांत निकालने के समान भयंकर है चाणक्य ने यह घोषणा की है कि मेरे क्रोध के सामने कोई व्यक्ति टिक नहीं सकता। मेरी शक्ति से मुकाबला करने वाला व्यक्ति आग में गिरने वाले पतिंगे की तरह विनष्ट हो जाएगा-

सद्यः परात्मपरिणामविवेकमूढः
कः शालभेन विधिना लभतां विनाशम्।।-1/10

चाणक्य की शिखा नन्दकुल को डसने वाली नागिन है-

नन्दकुल कालभुजगीं.............................शिखा मे ।।-1/9

3. अत्यन्त बुद्धिमान्-नन्द का विनाश तथा शूद्रापुत्र चन्दगुप्त को राजा बनाना-यह चाणक्य की ही बुद्धि का परिणाम है। अपनी बुद्धि के प्रयोग से बनाये गये जाल में वे राक्षस को इस तरह फंसते हैं कि राक्षस को बहार निकलने का एक ही रास्ता दिखाई देता है। वह है चन्दगुप्त के मन्त्रिपद का स्वीकार। चाणक्य ने अपनी चतुरता के बल से ही राक्षस के नाम से एक लेख

लिखवाया तथा उस पर राक्षस की ही मुहर लगवायी । यह लेख भी राक्षस के प्रियमित्र चन्दनदास के द्वारा चाणक्य ने लिखवाया । भागुरायण को मलयकेतु का मित्र बनवाकर उसके द्वारा राक्षस तथा मलयकेतु के बीच कलह करावाया। यह सब चाणक्य की बुद्धिमत्ता का ही परिणाम है।

4. कार्यपुट- चाणक्य अत्यन्त कार्यकुशल हैं । किसे क्या काम नहीं सौंपना चाहिये? कौन दण्डनीय है तथा कौन पुरस्कारणीय है? इस बात में चाणक्य अत्यन्त निपुण हैं।

5. स्वाभिमानी-चाणक्य अत्यन्त स्वाभिमानी है। वह कोई भी बड़ा से बड़ा कार्य अकेले करने में समर्थ हैं। उनकी चुनौती है कि जिस कार्य को सैकड़ों सेनाएँ भी एक साथ नहीं कर सकतीं, उसे कार्य को चाणक्य अपनी बुद्धि के बल पर कर सकते हैं-

एका केवलमेव साधनविधौ सेनाशतेभ्योऽधिका
नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्म।।-1/25

6. कुशल राजनीतिज्ञ-सम्पूर्ण नाटक में चाणक्य की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता प्रकट होती है उसकी कुशलता राजनीतिज्ञता। वे बड़े ही कूटनीतिज्ञ थे। गुप्तचरों का जाल बिछाकर राक्षस के क्रियाकलापों को वे सदा जानते रहते थे। चाणक्य की राजनीति का वर्णन भागुरायण करता है-

अहो चित्राकार नियतिरिव नीतिर्नयविदः।-5/3

चाणक्य की गुप्त बातें स्वयं चन्द्रगुप्त भी नहीं जान पाता था। उनके द्वारा एक ही कार्य में प्रयुक्त अनेक गुप्तचर भी परस्पर एक-दूसरे को नहीं जानते थे। विषकन्या द्वारा पर्वतक की हत्या तथा राक्षस पर हत्या का आरोप लगवाना, मलयकेतु तथा राक्षस में विरोध उत्पन्न करना इत्यादि चाणक्य की कूटनीतिज्ञता के उदाहरण हैं।

7. गुणग्राही-चाणक्य गुणग्राही है। अमात्यराक्षस के सदुणों के कारण ही राक्षस उसे चन्द्रगुप्त का मन्त्री बनाना चाहते थे। चाणक्य का विरोधी राक्षस जैसा व्यक्ति भी उसकी प्रशंसा करता है। इस प्रकार मुद्राराक्षस के अनुशीलन से भारत के महान सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य के मन्त्री महान् राजनीतिज्ञ चाणक्य की उपुर्यक्त विशेषताएँ स्पष्ट होती है।

राक्षस-अमात्यराक्षस 'मुद्राराक्षस' नाटक का प्रतिनायक है। इसका चरित्र एक 'आदर्शचरित्र' है। यह भी श्रोत्रिय ब्राह्मण है तथा नन्द का स्वामिभक्त मन्त्री हैं राक्षस इसका नाम है तथा अमात्य (मन्त्री) होने के कारण इसे 'अमात्यराक्षस' कहा जाता है। सम्पूर्ण नाटक में प्रारम्भ से अन्त तक वह प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उपस्थिति रहता है। प्रतिनायक होने पर भी नाटक के अन्त में भरतवाक्य कहने का श्रेय राक्षस को ही प्राप्त है। उसका सारा जीवन संघर्ष से भरा हुआ है। वह चन्द्रगुप्त को नष्ट करने का प्रयत्न अन्त तक करता है, किन्तु चाणकय की कूटनीतियों के समक्ष उसे पराजय स्वीकार करनी पड़ती है। समस्त नाटक का आलोचना करने पर अमात्यराक्षस की निम्नलिखित चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं।

1. अत्यन्त स्वामिभक्त - अमात्यराक्षस अपने स्वामी नन्द का अत्यन्त भक्त है। नन्दकुल का विनाश करने वाले चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त से वह अन्त तक प्रतिशोध लेने का प्रयत्न करता है। स्वामी की आत्मा को सन्तुष्ट करने के लिए वह अपने परिवार की भी परवाह नहीं करता। स्वयं

चाणक्य भी अमात्यराक्षस की स्वामिभक्ति की प्रशंसा करते हुए कहते हैं-

भर्तुर्ये प्रलयऽपि पूर्वसुकृतासश्र निःसश्या

भक्त्या कार्यधुरां वहन्ति कृतिनस्ते दुर्लभास्त्वादृशाः।।-(1/14)

राक्षस में प्रज्ञा, पराक्रम तथा भक्ति-इन तीनों की त्रिवेणी हैं नन्दकुल के विनाशकों को समाप्त कर देने तक राक्षस ने सभी सुख सुविधाओं का परित्याग कर दिया था -

चिरात्प्रभूत्यार्यः परित्यक्तोचिशरीरसंस्कारः।

2. राजनीतिज्ञ - राक्षस कुशल राजनीति हैं, भले ही वह चाणक्य की तरह कूटनीतिज्ञता में निपुण नहीं, फिर भी चन्द्रगुप्त का नाश करने के लिये वह हर सम्भव प्रयास करता है। चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त के बीच कलह कराने के लिये भी वह स्तुति पाठकों को भेजता है। उसके गुप्तचर चन्द्रगुप्त पर नजर रखे रहते हैं। सारे प्रयास करने पर भी भाग्य उसका साथ नहीं देता।

3. अत्यन्त उदार तथा सरलहृदयी- राक्षस अत्यन्त सरलहृदय वाला है। अपनी सरलता के कारण ही वह चाणक्य भागुरायण आदि से धोखा खाता हैं वह सरलतावश भागुरायण को अपना हितैषी समझता है, किन्तु वास्तव में भागुरायण चाणक्य का गुप्तचर निकलता है। राक्षस अत्यन्त ही भावुक प्रवृत्ति का है। द्वितीय अंक में विराधगुप्त की अवस्था देखकर वह स्वयं भी रो पड़ता है। उसके पराजय का कारण उसका सरल हृदय है। चाणक्य से परास्त होने पर अन्ततः वह कहता है**'हन्त रिपुभिर्मे हृदयमपि स्वीकृतम्।।''**

चन्दनदास को बचाने के लिये वह अपने शरीर की भी परवाह न करके कुसुमपुर आ जाता है।

4. वीर तथा दृढ़निश्चयी- राक्षस शस्त्रविद्या में अत्यन्त निपुण है। उसने अकेले ही चन्द्रगुप्त की सेना और चाणक्य की बुद्धि दोनों को परेशान कर रखा था। यह बात भी स्वयं चाणक्य ने ही स्वीकार की है। वह नन्द के अमात्य प्रधान के साथ ही साथ उसका प्रधान सेनापति भी था। स्वयं राजा नन्द भी उसकी वीरता पर भरोसा रखते थे-

यत्रेशा मेघनीला चरति गजघटा राक्षसस्तत्र यायात्

एतत्पारिप्लवाम्भः प्लुति तुरगबलं वार्यताम् राक्षसेन।

पत्तीनां राक्षसोऽन्तं नयतु बलमिति प्रेशयन्मह्यमाज्ञाम्

अज्ञासीः प्रीतियोगात् स्थितमिव नगरे राक्षसानां सहस्रम्।।

उसे अपनी तलवार पर पूरा भरोसा था। संसार के सभी कार्य वह तलवार के बल पर करने में समर्थ था-

निस्त्रिंवषोऽयं सजलजलदव्योमसाशमूर्ति-

र्युद्धश्रद्धापुलकित इव प्राप्तसख्यः करेण-6/19

राक्षस दृढ़निश्चयी है। वही अन्त तक चाणक्य तथा चन्द्रगुप्त को परास्त करने का प्रयत्न करता रहता है।

5. शास्त्रज्ञाता-राक्षस शास्त्रज्ञाता है। उसे ज्योतिष आदि शास्त्रों का अच्छा ज्ञान है। वह कर्म तथा पौरूष की अपेक्षा भाग्य पर अधिक विश्वास करता है। अपनी पराजय का कारण वह भाग्य

को ही ठहराता है। उसकी स्मरण शक्ति चाणक्य जैसी नहीं। उसने चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य के पीछे अपने इतने अधिक गुप्तचर लगाये थे कि वह स्वयं ही नहीं जान पाता था कि किस गुप्तचर को किस कार्य में लगाया गया है। फिर भी सम्पूर्ण नाटक को देखने पर यह कहा जा सकता है कि राक्षस सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व से सम्पन्न व्यक्ति था।

चन्द्रगुप्त-'मुद्राराक्षस' नाटक का उपनायक चन्द्रगुप्त है। वह राजा नन्द के द्वारा एक शूद्रा स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। वह बाल्यकाल से ही बड़ा मेधावी तथा प्रतिभावान् था। उसे राजा बनाने का श्रेय चाणक्य को ही है। सम्पूर्ण नाटक को देखने पर चन्द्रगुप्त की निम्नलिखित चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं-

1. सुयोग्य राजा- चन्द्रगुप्त अत्यन्त ही सुयोग्य तथा प्रजाप्रेमी राजा है। राक्षस को उसकी तेजस्विता का आभास उसके बचपन में ही हो गया था-

बाल एव लोकेऽस्मिन सम्भावितमहोदयः।-7/12

वह राजनीति में भी निपुण है तथा सभी राजकर्मों को जानता है। वह अत्यन्त वाक्पटु भी है। चाणक्य के साथ कृतककलह होने पर वह चाणक्य के प्रश्नों का उत्तर चतुरता के साथ देता है।

2. अत्यन्त विनम्र- चन्द्रगुप्त बड़ा ही विनम्र स्वभाव का है। चाणक्य की सभी आज्ञाओं को वह नम्रता के साथ स्वीकार करता है, जब चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को नकली झगड़ा करने के लिये कहा था, तब चन्द्रगुप्त ने किसी तरह चाणक्य की आज्ञा स्वीकार की, परन्तु चाणक्य के साथ झगड़ा करना उसे पाप करने की तरह लगता था। अन्त में जब चन्द्रगुप्त राक्षस से मिलता है, तो उसे भी विनम्रतापूर्वक अभिवादन करता है।

3. परम गुरुभक्त - चन्द्रगुप्त अपने गुरु चाणक्य का अत्यन्त आदर करता है। गुरु की आज्ञा से वह अपने गुरु से कृतककलह करना भी स्वीकार कर लेता है।

4. उदासीन प्रवृत्ति वाला- चन्द्रगुप्त के राज्य का सारा भार गुरु चाणक्य के ऊपर ही है। इसलिये वह स्वयं राज्य के प्रति उदासीन रहता है। राक्षस भी कहता है कि चन्द्रगुप्त सचिवायत्त सिद्धिवाला है। अर्थात् मन्त्री के ऊपर अपने राज्य का सारा भार रखकर निश्चिन्त रहता है। इसी कारण चन्द्रगुप्त को राज्यकर्म अत्यन्त कष्टदायक प्रतीत होता है-

''राज्यं हि नाम राजधर्मानुवृत्तिपरस्य नृपतेर्महदप्रीतिस्थानम्।''

5. वीर तथा पराक्रमी-चन्द्रगुप्त शूरवीर तथा पराक्रमी योद्ध है। बिना युद्ध के शत्रु पर विजय प्राप्त करना चन्द्रगुप्त के लिये लज्जा की बात है-

''विनैव युद्धादार्येण जितं दुर्जयं परबलमिति लज्जित एवास्मि।''वह बचपन से ही वीर है।

6. उत्सवप्रिय - चन्द्रगुप्त प्रकृति प्रेमी तथा उत्सवप्रिय राजा है। कौमुदीमहोत्सव की शोभा देखने की उसे बड़ी ही उत्कण्ठा है। किन्तु चाणक्य के द्वारा कौमुदी महोत्सव रोक देने से चन्द्रगुप्त को निराश होना पड़ता है। इस प्रकार चन्द्रगुप्त में उपर्युक्त विशेषताएं स्पष्ट होती हैं। चाणक्य, जो कि सम्पूर्ण नाटक में चन्द्रगुप्त को वृशत कहता है, अन्ततः चन्द्रगुप्त को ''भी राजन् चन्द्रगुप्त।'' कहकर सम्बोधित करता है।

मलयकेतु- मलयकेतु मुद्राराक्षस का उपप्रतिनायक है। यह पर्वतेश्वर का पुत्र है। मुद्राराक्षस में

मलयकेतु का चरित्र विशेष प्रभावशाली नहीं दिखाया गया है। तथापि इसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. स्वाभिमानी-मलयकेतु अत्यन्त स्वाभिमानी था। अपने पिता के वध का बदला लेने के लिये वह हर सम्भव प्रयास करता है। इसी कारण वह राक्षस की सहायता लेकर चन्द्रगुप्त पर आक्रमण करने का निश्चय करता है।

2. वीर तथा पराक्रमी- मलयकेतु वीर तथा पराक्रमी है। उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं पिता पर्वतेश्वर के श्राद्वादि तभी करूंगा, जब शत्रुओं का वध हो जायेगा। शत्रुओं का नाश न होने पर उसे अपना पौरुष व्यर्थ प्रतीत होता है। वह आत्मग्लानि से भर जाता है। वह शीघ्रातिशीघ्र कुसुमपुर पर आक्रमण करना चाहता है। इससे यह सिद्ध होता है कि मलयकेतु वीर योद्धा था।

3. शंकालु प्रवृत्ति वाला-मलयकेतु अत्यन्त शंकालु स्वभाव वाला था। वह भावावेश में आकर कुछ भी कर डालता था। अपन परम हितैषी अमात्य राक्षस पर वह संदेह करता था, जबकि उसके शत्रु भागुरायण, जो कि मलयकेतु का मित्र बना हुआ था, उसकी बातें मलयकेतु को सत्य प्रतीत होती हैं। वह राक्षस की निष्कपट बातों तथा आचरणों को भी कपटपूर्ण समझने लगता है।

4. विवेकहीन-मलयकेतु विवेकशून्य है। भागुरायण उसके मन में राक्षस में प्रति दुर्भावना भर देता है, जिससे वह राक्षस को ही अपना शत्रु मानने लगता है। वह प्रसादी तथा अहंकारी है। वह बिना विचार किये काम करता है। वह यह मानकर अत्यन्त खुश होता है कि वह राक्षस के अधीन नहीं है। वह अत्याश्चर्यजनक रूप से विवेकहीन है। उसे यह भी समझ में नहीं आता कि राक्षस अपने शत्रु चन्द्रगुप्त से कैसे सन्धि कर लेगा? अपने ही हितैषी कौलूत चित्रवर्मा आदि राजालोगों को वह मरवा डालता हैं अपनी विवेकहीनता के कारण ही वह अन्ततः चन्द्रगुप्त का बन्दी बन जाता है। इस प्रकार मुद्राराक्षस के उपप्रतिनायक मलयकेतु के चरित्र में उपुर्यक्त विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

चन्द्रनदास-मुद्राराक्षस में चन्दनदास का चरित्र अत्यन्त प्रभावशाली, प्रशंसनीय तथा परोपकार से परिपूर्ण है। यह मणिकारों का राजा है। कुसुमपुर का यह जाना माना धनिक है। यह अमात्य राक्षस का मित्र है। मुद्राराक्षस को देखने पर चन्दनदास के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. राक्षस का परम मित्र तथा स्नेही-चन्दनदास अमात्यराक्षस का परम मित्र है। अमात्यराक्षस पर संकट आने पर वह अपने परिवारजनों को चन्दनदास के ही घर में सुरक्षित रख देता है। चन्दनदास भी राक्षस के परिवारजनों को अपने घर से किसी सुरक्षित जगह पर भेज देता है।

2. निर्भय-चन्दनदास अत्यन्त निर्भय है। वह चाणक्य के द्वारा कठोर दण्ड देने के भय से भी भयभीत नहीं होता और स्पष्ट उत्तर दे देता है कि यदि राक्षस के परिवारजन मेरे घर में होते, तो भी मैं उन्हें समर्पित नहीं करता फिर जब राक्षस परिवारजन मेरे यहाँ नहीं हैं तो मैं उन्हें कहाँ से दूँगा ?

3. अत्यन्त त्यागी-चन्दनदास मित्र के परिवारजनों की रक्षा के लिये अपने प्राण देने के लिये भी

तैयार हो जाता है। चाणक्य स्वयं उसकी प्रशंसा करते हुए कहता है कि-

सुलभेश्वर्थलाभेषु परसंवेदने जनः।
क इदं दुष्कर कुर्यादिदानीं शिविना बिना ।।-(1/23)

अमात्यराक्षस भी उसकी तुलना राजा शिवि के साथ करता है। चन्दनदास अपना आदर्श अपनी पत्नी को बताता है-**''आर्ये! अयं मित्रकार्येण में विनाशो न पुनः पुरुषदोषेण तदलं विशादेन।''**इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि चन्दनदास बलिदान की मूर्ति है। मित्र के कार्य के लिये वह सूली पर चढ़ने से भी डरता। इसीलिये अन्त में चाणक्य उसे व्यापारिक संघ का प्रधान बना देता है।

1.4 मुद्राराक्षस का साहित्यिक एवं ऐतिहासिक परिचय

मुद्राराक्षस अपने ढंग का अनुपम नाटक है जिसमें लेखक ने परम्परागत नाट्य-रूढ़ियों का परित्याग करके नवीन मार्ग का प्रवर्तन किया है। लेखक नाट्यशास्त्र का महापण्डित होकर भी अपने मौलिक गुण के कारण एक शक्तिशाली नवीन नाट्य-पद्धति पर चलता है जिसका अनुकरण तक लोग नहीं कर सके। कौटिल्य के अर्थशास्त्र का व्यावहारिक रूप देकर विशाखदत्त ने इस नाटक की सर्जना की है। इसमें नाट्य-सुलभ प्रेम-कथा का परित्याग कर कूटनीति-विषयक वस्तु-विन्यास किया गया है, राजा को नायक न बनाकर निरीह ब्राह्मण चाणक्य को नायक बनाया गया है, नायिका को स्थान न देकर प्रतीकात्मक नायिका चाणक्य की बुद्धि का प्रयोग है, वीररस के अभिनव रूप कूटनीति-वीर का निवेश करके विदूषकादि पात्रों के बहिष्कार के अतिरिक्त हास्य या श्रृंगार रस का स्वल्प-प्रयोग भी नहीं है। यथार्थ के कठोर धरातल पर कथानक लुढ़कता है, रक्तपात के बिना ही केवल बुद्धि का खेल दिखाकर नायक की विजय वर्णित है - ऐसे अभिनव वीररस-प्रधान नाटक के रूप में मुद्राराक्षस का संस्कृत नाट्य-जगत में अपूर्व स्थान है।

विशाखादत्त ने इस नाटक को घटना-प्रधान बनाया है, चरित्रमूलक नहीं। सभी पात्र अपनी-अपनी विशिष्टताओं के साथ घटनाओं को आगे बढ़ाने में सन्नद्ध हैं। सभी घटनाओं को मुख्य फल के लाभ की दिशा में त्वरित गति से प्रेरित किया गया है। एक भी अप्रासंगिक या अनावश्यक कथांश या वाक्य तक इसके विकास-क्रम में प्रयुक्त नहीं है। इस प्रकार पूरा नाटक कसा हुआ है। घटनाओं के पर्त जैसे-जैसे खुलते हैं, कुतूहल और उत्सुकता का शमन होता जाता है किन्तु उत्सुकता के भी नये आयाम बनते हैं जिनका निवारण क्रमशः होता रहता है। इसीलिए कार्यान्विति की दृष्टि से इसके घटना-चक्र की महत्ता है।

राजनीतिक-विषयक नाटक में रहस्य-रोमांच का समावेश करते हुए लेखक ने अपनी अद्भूत नाट्यकाल के कारण इसे श्रृंगार -प्रधान नाटकों के समान रोचक बनाया है। नाटक की पृष्ठभूमि की पूर्ति के लिए प्रथम अंक में चाणक्य का लम्बा स्वागत भाषण (1/11 के पूर्व से 1/16 तक) एवं द्वितीय अंक में खण्ड-खण्ड करके विराधगुप्त (राक्षस के गुप्तचर का प्रतिवेदन) (2/13 के पूर्व से 2/16 के पूर्व तक) प्रस्तुत किये गये हैं। चाणक्य के भाशण में कोई संवाद नहीं, पूरा भाषण एकांश (न्दपज) है जबकि विराधगुप्त के प्रतिवेदन पर राक्षस की प्रतिक्रियाएँ दिखायी गयी हैं।

कूटनीति में प्रवीण दोनों मन्त्रियों (चाणक्य तथा राक्षस) की नीतियों के घात-प्रतिघात की घटनाएँ नाटक को सार्थक तथा गतिशील बनाती हैं । इनके स्वागत-भाषणों से सामाजिक को इनका वास्तविक कार्य समझने में सुविधा होती है।

विशाखदत्त ने राक्षस के मुख से नाटक-कर्ता और राजनीति में खेलनेवाले की समानता प्रकट करायी है- कर्ता व नाटकानामिममनुभवति क्लेशमस्मद्विधो वा (4/3 अन्तिम चरण)। दोनों को समान रूप से क्लेशका अनुभव करना पड़ता है; दोनों ही संक्षिप्त कार्योपक्षेप (आरम्भ) करके उस कार्य का विस्तार चाहते हैं, गर्भित बीजों के अत्यन्त गहन और गूढ़ फल को उद्भिन्न करते हैं, बुद्धि का प्रयोग करके विमर्श (कर्तव्याकर्तव्य का विष्लेशण, विमर्ष सन्धि का निर्माण) करते हैं एवं फैले हुए कार्य-समूह का उपसंहार भी कर लेते हैं। इस प्रकार नाट्य-रचना और राजनीतिक दाव-पेंच समान ही है, जब विधि-सम्मत (शास्त्रीय) नाट्य-रचना कठिन है, तब स्वतन्त्र एवं प्रगतिवादी रचना की कठिनाई का क्या कहना? लेखक ने इतिवृत्त-निर्माण में तथा उसके विकास में पूरी स्वाधीनता दिखायी है।

मुद्राराक्षस में कुल 29 पात्र है, एकमात्र स्त्रीपात्र चन्द्रनदास की पत्नी है जो सप्तम अंक में चन्दनदास के मृत्युदण्ड-दृश्य में करूण-रस का उद्भव करती है। शेष सभी पात्र अपनी-अपनी विशिष्टता रखते हुए भी चाणक्य के हाथों की कठपुतली हैं । इन दोनों पात्रों के संघर्ष का ही प्रतिफल पूरे नाटक में हुआ है । चाणक्य प्रखर कूटनीतिज्ञ, शाठ्यनीति का प्रयोक्ता, निरन्तर सावधान, कर्मठ पुरुषार्थवादी, राजनीति के खेलों (दाँव-पेंच, जोड़-तोड़) में परम प्रवीण, बहुत बड़ी परीक्षा के बाद किसी पर विश्वास करने वाला, दम्भ किन्तु अत्यन्त साधारण स्तर का जीवन जीने वाला अमात्य है; उसमें राक्षस के गुणों को पहचानने की क्षमता है इसीलिए स्वयं चन्द्रगुप्त का अमात्य न बनकर राक्षस को उस पद पर स्थापित करने में कूटनीति का प्रयोग करता है । वह प्रधान पात्र या नायक है, उसे ही अपनी नीतियों के प्रयोग का फल मिलता है । दूसरी ओर राक्षस कूटनीति होते हुए भी ऋजुनीति का प्रयोक्त है । वह भाग्यवादी, कपटी मित्रों पर भी विश्वास करनेवाला, अपने घर के भेदियों को न समझने वाला, नीति का प्रयोग करके निश्चिन्त हो जाने वाला, उदार मित्र के लिए त्याग करने वाला एवं चाणक्य के अनुसार प्रज्ञा-विक्रम-भक्ति का समुदित रूप है।

ये दोनों अमात्य क्रमश: चन्द्रगुप्त ओर मलयकेतु को आधार बनाकर नीति-कौशल दिखाते हैं। ये दोनों पात्र परस्पर विरोधी चरित्र के हैं। चन्द्रगुप्त योग्य राजा है किन्तु चाणक्य के हाथों में समर्पित है। मलयकेतु स्वतन्त्र बुद्धि वाला, पुरुषार्थी किन्तु मूर्ख और उद्दण्ड है। इसीलिए भावुक राक्षस उससे दूर चला जाता है । बुद्धिवादी चाणक्य के हाथों में खेलने वाले चन्द्रगुप्त का राज्य शक्तित्रय-सम्पन्न होकर स्थिर बन जाता है । शकटदास और चन्दनदास राक्षस के विश्वसनीय मित्र हैं, मित्र के लिए सर्वस्व त्याग करते हैं।

इस नाटक में कूटनीति-वीररस है जो अन्य किसी संस्कृत नाटक में नहीं है, शास्त्रों में विवेचित तक नहीं हुआ है । 'मुद्राराक्षस की वीरसाभिव्यक्ति में समसामयिक राजनीतिक जीवन की उन्नतिशीलता के लिए उत्सुक एक कर्मठ राजनीतिक नेतृत्व की अदम्य आत्मोसर्ग-भावना और

उत्साह की प्रबल प्रेरणा का हाथ है और यही वह रहस्य है कि संस्कृत नाटककार किसी अन्य मुद्राराक्षस की रचना न कर सके। इस नाटक में राष्ट्रकी सुरक्षा के लिए कर्तव्य-भावना का ऐसा प्राबल्य है कि उसके समक्ष रति (प्रेम) आदि के भाव शून्यवत् हैं। इसीलिए इसमें सभी पात्र अपूर्व उत्साह से भरे हैं, अपने-अपने कार्यों के प्रति तन्मयता से समर्पित हैं। जय-पराजय की भावना से ऊपर यह कर्तव्यपालन का नाटक है जो अपने प्रयोजन में पूर्णतः सफल है।

नायक का प्रश्न-मुद्राराक्षस के नायक को लेकर प्रायः तीन मत प्रचलित हैं जिनमें राक्षस, चन्द्रगुप्त और चाणक्य को नायक कहा गया है। सामान्यतः नायक के विषय में परम्परा से यही कहा गया है-

प्रख्यातवंशो राजर्षिर्धीरोदात्तः प्रतापवान्।
दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो व गुणवान्नायको मतः।। (साहित्यदर्पण)

इस सिद्धान्त के अनुसार राजकुल में उत्पन्न व्यक्ति ही नायक की कोटि में आता है। आधुनिक लोग फलप्राप्ति करने वाले को नायक बताते हैं तो तर्क की दृष्टि से नाटक में प्रधान भूमिका धारण करने वाला नायक होता है। इसीलिए तीन पात्रों का नायकत्व विभिन्न मतों का आधार है।

जहाँ तक राक्षस के नायकत्व का प्रश्न है वह उसके मन्त्रिपद प्राप्त करने अर्थात् फललाभ की घटना पर आश्रित है, जो राक्षस भूतपूर्व राजा (धननन्द) का अमात्य था, वह इस नाटक के अन्त में चन्द्रगुप्त का अमात्य बन जाता है-इसलिए मुख्य फल का अधिकारी होने से नायक हुआ। किन्तु इस पर आक्षेप होता है कि जिस फल को राक्षस प्राप्त करता है, उसके लिए न तो उसे स्पृहा है ओर न वह इसके लिए चेष्टाशील ही है। वस्तुतः चाणक्य की महानुभावता ओर गुणग्राहकता का यह परिणाम है कि राक्षस पर यह फल (मन्त्रिपद-लाभ) आरोपित होता है। अतः फललाभ का तर्क उस पर असंगत है। फललाभ के प्रति ईच्छा या चेष्टा आवश्यक है। राक्षस जन्म से ब्राह्मण है, क्षत्रिय नहीं अर्थात् राजवंश का नहीं।

चन्द्रगुप्त का नायकतव कुछ अधिक महत्त्व रखता है क्योंकि वह नन्द का पुत्र है, राजवंश का है। उसमें राज्य की दो शक्तियाँ हैं-प्रभुशक्ति और उत्साह-शक्ति। उसे तीसरी शक्ति (मन्त्रशक्ति)की प्राप्ति चाणक्य के बुद्धिबल से नाटक के अन्त में हो जाती है। राजकुल से सम्बन्ध एवं फललाभ की दृष्टि से उसे नायक कहा गया है। किन्तु यह मत भी दोषपूर्ण है। चन्द्रगुप्त राजा अवश्य है किन्तु इस नाटक में उसे राजकुलोत्पन्न नहीं माना गया है। चाणक्य तो उसे सदा 'वृशल' (शूद्र) कहकर सम्बोधित करता है। वह कुलीन नहीं, अपितु कुलहीन है। राक्षस राजलक्ष्मी को कोसते हुए कहा है-

पृथिव्यां कि दग्धाः प्रथितकुलजा भूमिपतयः?
पति पापे, मौर्य यदसि कुलहीनं वृतवती ? (मुद्रा०2/7 पृ०)

अतः परम्परावादियों का यह मत खण्डित हो जाता है कि वह कुलीन था। दूसरी बात यह है कि उसका चरित्र इस नाटक में विकसित नहीं हुआ है। वह एक गौण ही है केवल तृतीय और सप्तम अंकों में वह मंच पर आता है। ऐसी स्थिति में चाणक्य को ही नायक कहा जा सकता है, यही नाट्यकार की लालसा है। उसने इस राजनीतिक नाटक की रचना में रूढ़िगस्त एवं जड़ीभूत

नाट्य-परम्परा को नहीं माना, स्वयं नाट्यशास्त्र का वह पण्डित जो था, 'पथि यदि कुपथे वा वर्तयामः स पन्थाः' का निर्माता था। लेखक नाटक के आरम्भ से ही चाणक्य का पक्षधर है, सभी पात्रों के ऊपर वह उसे दिखाता है। मुद्राराक्षस से इतिवृत्त की विकास ही चाणक्य के पक्ष में और विपक्ष में होने वाले घटना-क्रमों के प्रवर्तन के रूप में होता हैः क्रमशः विपक्ष सिकुड़ता जाता है और पक्ष उस पर भारी पड़ने लगता । 'प्रतिहत-परपक्षा आर्यचाणक्यानीतिः' (6/1) कहकर नाटककार ने भी इसका समर्थन किया है। विशाखदत्त की नाट्यशाला का अनुपम रत्न चाणक्य ही है जो सम्पूर्ण कथानक को और तद्नुसार पात्रों को भी अपनी मुट्ठी में रखता है। लेखक ने नायिका तो नहीं रखीं, किन्तु कूटनीति-प्रधान नाटक में प्रीतकात्मक बुद्धि को ही चाणक्य की अनवरत सहचरी के रूप में प्रस्तुत किया है। चाणक्य कहता है कि मेरे पास से सभी लोग चले जायें किन्तु नन्दों के उन्मूलन में शक्ति का
प्रदर्शन कर चुकी केवल मेरी बुद्धि ही पास रहे तो सब देख लूँगा-

ये याताः किमपि प्रधार्य हृदये पूर्वं गता एव ते
ये तिष्ठिन्ति भवन्तु तेऽपि भवन्तु तेऽपि गमने कामं प्रकामोद्यमाः।
एका केवलमर्थसाधनविधौ सेनाशतेभ्योऽधिका
नन्दोन्मूलनदृष्टवीर्यमहिमा बुद्धिस्तु मा गान्मम।।

विशाखदत्त ने नाट्य के अनेक उपादानों में स्वाधीनता दिखायी है तो नायक की रूढ़ि के भश् में भी उनकी स्वाधीनता आश्चर्यजनक नहीं है। फलप्राप्ति की बात उठायें तो राक्षस के अमात्य बनने से न स्वयं राक्षस को वैसी प्रसन्नता होती है और न चन्द्रगुप्त की ही, जैसी प्रसन्नता अपनी प्रति (मौर्यवंश का सर्वतोभावेन प्रतिष्ठा न) पूर्ण करने से चाणक्य को होती है। चाणक्य ही इस कार्य के लिए उत्सुक था और नाटक के आरम्भ से ही तद्विशयक प्रयत्नों में लगा था। आरम्भ यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति और फलागम-इन पाँच अवस्थाओं की दृष्टि से विचार करें तो सर्वत्र चाणक्य ही मिलेगा। राक्षस के गुणों के पारखी भी वही है, जो राक्षस चन्द्रगुप्त की हत्या और चाणक्य के निर्वासन के प्रति कृतसंकल्प था, उसका हृदय-परिवर्तन करके चन्द्रगुप्त की शरण में आने को विवश करना चाणक्य की बुद्धि के कौशल का अद्भुत चमत्कार था। स्वयं राजसत्ता का सुख छोड़कर राष्ट्र को सामर्थ्यवान् बनाने की दुर्लभ भावना से वह आद्यन्त भरा हुआ है। निःस्पृह ब्राह्मण को नायक बनाकर विशाखदत्त ने नायक की इस निरुक्ति को चरितार्थ किया है-नयति घटनाचक्रं फलप्राप्तिपर्यन्त इति नायकः। अपनी सहचरी बुद्धि की क्षमता पर उसे पूर्ण विश्वास है कि राक्षस का निग्रह वह आरण्यक गज के समान चन्द्रगुप्त के कार्य के लिए कर लेगा-

बुद्ध्या निगृह्य वृशलस्य कृते क्रियाया-
मारण्यकं गजमिव प्रगुणीकरोमि। (1/27उ०)

इस प्रकार मुद्राराक्षस का नायक चाणक्य ही है जो अपने विचित्र रहस्यमय व्यक्तित्व से पूरे नाटक के घटनाक्रम पर छाया रहता है।

1.5 सारांश

मुद्राराक्षस सात अंको का राजनीतिक नाटक है। मुद्रा (राक्षस की अँगूठी) के द्वारा राक्षस को वश में करने का मुख्य कथानक होने से इस 'मुद्राराक्षस' (मुद्रया गृहीतो राक्षसों मुद्राराक्षसः, तमधिकृत्य कृत नाटकं मुद्राराक्षसम्) कहते हैं। कूटनीति-विशारद चाणक्य (कौटिल्य) नन्दवंश का नाश, अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार, करके मौर्यवंश के तरुण चन्द्रगुप्त को राजा बना चुका है। अपनी कूटनीति के बल पर नन्दवंश के स्वामिभक्त अमात्य राक्षस को वश में करके वह चन्दगुप्त को मन्त्री बनने के लिए विवश कर देता है। इस कार्य में चाणक्य की गुप्तचर व्यवस्था तथा राक्षस की मुद्रा से अंकित एक कूटलेख की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। राक्षस की ऋजुनीति एवं कौटिल्य की शाठ्यनीति के परस्पर संघर्षों से यह नाटक भरा है जिसमें शाठ्यनीति की विजय होती है। इस इकाई के माध्यम से विशाखदत्त के मुद्राराक्षस एवं अन्य ग्रन्थों की सहायता से उनके जीवन पर प्रकाश डाला गया है उनकेक कृतित्त्व मुद्राराक्षस से साहित्यिक एवं ऐतिहासिक स्वास्थ्य प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसकी सहायता से आप विशाखदत्त एवं उनके द्वारा रचित मुद्राराक्षस के विषय में इस इकाई के अध्ययन के बाद जान गये होंगे।

बोध प्रश्न

(अ) विशाखदत्त के पिता का नाम क्या था ?

(क) अन्नभट्ट (ख) भास्करदत्त या पृथु (ग) विभ (घ) भानुदत्त

(ख) मुद्राराक्षस कितने अंकों में विभक्त है?

(क) 5 (ख) 10 (ग) 7 (घ) 12

(स) नायिका रहित नाटक का नाम बताइये

(क) हर्षचरित (ख) वासवदत्ता (ग) अभिज्ञानशाकुन्तल (घ) मुद्राराक्षस

निम्न में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) विशाखदत्त का समय --------------- माना गया है।

(ख) मुद्राराक्षस के नायक का नाम...है।

(ग) ....के गुरु का नाम चाणक्य है।

3. निम्न प्रश्नों में सही के सामने (√) तथा गलत के सामने (×) चिन्ह लगायें।

(क) राक्षस ब्राह्मण वर्ण का है। ( )

(ख) चाणक्य ने शक वंश का नाशकिया ( )

(ग) इस नाटक में वीर रस का प्रयोग ( )

1.6 शब्दावली

अभिनेता -अभिनय करने वाला

नायक -प्रमुख पात्र

अप्रासंगिक	-प्रसंगरहित
प्रयुक्त-प्रयोग	किया हुआ
प्रविण	-निपुण
विश्रुत	-भूलने योग्य नहीं

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. अ (ख)	ब (ग)		स (घ)
2. (क) 400 से 450ई॰	(ख) चाणक्य		(ग) चन्द्रगुप्त
3. (क) (√) (ख)	(ग)	(ग)	(√)

1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(1) संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा (ऋषि)
(2) मुद्राराक्षस नाटक-महाकवि विशाखदत्त
(3) संस्कृत साहित्य का वृहद इतिहास-पं॰बलदेव उपाध्याय

1.9 अन्य उपयोगी ग्रन्थ

(1) संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा (ऋषि)
(2) मुद्राराक्षस नाटक-महाकवि विशाखदत्त
(3) संस्कृत साहित्य का वृहद इतिहास-पं॰बलदेव उपाध्याय

1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

(1) मुद्राराक्षस का कथासार प्रस्तुत कीजिए।
(2) मुद्राराक्षस के आधार पर नायक चाणक्य का चरित्र चित्रण प्रस्तुत करें।